

जय विमल विमल-पद देनहार, जय जय अनन्त गुण-गण अपार ।
जय धर्म धर्म शिव-शर्म देत, जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत ॥
जय कुन्थु कुन्थुवादिक रखेय, जय अरजिन वसु-अरि छय करेय ।
जय मल्लि मल्ल हत मोह-मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत-शल्ल-दल्ल ॥
जय नमि नित वासव-नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष-चक्र नेम ।
जय पारसनाथ अनाथ-नाथ, जय वर्द्धमान शिव-नगर साथ ॥

(त्रिभंगी)

चौबीस जिनन्दा, आनन्द-कन्दा, पाप-निकन्दा, सुखकारी ।

तिन पद-जुग-चन्दा, उदय अमन्दा, वासव-वन्दा, हितकारी ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

भुक्ति-मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर ।

तिन-पद मन-वच-धार, जो पूजै सो शिव लहै ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

करलो जिनवर का गुणगान

करलो जिनवर का गुणगान, आई मंगल घड़ी ।

आई मंगल घड़ी, देखो मंगल घड़ी ॥१॥

वीतराग का दर्शन पूजन भव-भव को सुखकारी ।

जिन प्रतिमा की प्यारी छवि-लख मैं जाऊँ बलिहारी ॥करलो॥२॥

तीर्थकर सर्वज्ञ हितंकर महा मोक्ष के दाता ।

जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता ॥करलो॥३॥

प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते ।

धर्म ध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते ॥करलो॥४॥

सम्यक्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता ।

रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता ॥करलो॥५॥

निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती ।

निज स्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती ॥करलो॥६॥